ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2020; 6(2): 345-347
www.allresearchjournal.com
Received: 13-12-2019
Accepted: 17-01-2020

डॉ० शंकर शरण प्रसाद
+2 बासुदेव मिश्र उच्च विद्यालय, सिमरी, बिहार, भारत

Correspondence Author:
डॉ० शंकर शरण प्रसाद
+2 बासुदेव मिश्र उच्च विद्यालय, सिमरी, बिहार, भारत

मैथिलकवि विद्यापति की महाभावोपासनाः एक समीक्षा

डॉ० शंकर शरण प्रसाद

सारांश
साधनाजगत् में प्रीति की पराकाष्ठा को महाभाव कहा जाता है। इस प्रीति की अष्ट अन्तर्दशाएँ होती है। महाभाव में संयोग एवं वियोगजन्य लीलाओं का आनन्द प्राप्त होता है। इस महाभाव का वर्णन मधुररस में किया जाता है। रसिकसन्त कवियों ने भगवान् पुरुषोत्तम के आलम्बनत्व में इसका वर्णन किया है। वस्तुतः इस परमभाव की उपासना से सहज ही परमानन्द प्राप्त हो जाता है। राधाकृष्ण की लीलावर्णन के सन्दर्भ में कवियों ने महाभाव को प्रख्यापित किया है।

प्रस्तावना
मैथिलकविकोकिल विद्यापति अपरूप के कवि माने जाते हैं। इन्होंने सौन्दर्य को परम शिव के नयनों से देखा है और इनकी वाणी–वन्या (सरिता) ने सहृदयों को आकण्ठ आप्लावित किया है। विद्यापति ने– 'जन्म अविध हम रूप निहारल, नयन न तिरपित भेल' की उद्घोषणा के साथ यह भी कहा है– 'सेहो पिरीत अनुराग बखानिअ तिल–तिल नूतन होय।'
कुछ लोग विद्यापति को भक्त कवियों की कोटि में परिगणन करते हैं परन्तु, इस महाकवि के गीतों के पारायण से यह तथ्य प्रकट होता है कि इन्होंने प्रेम एवं सौन्दर्य की व्याख्या की है। इनके गीतों में रति के स्वाभाविक विकास और प्रतिक्षण वर्द्धमान सौन्दर्य का ही वर्णन हुआ है।
विद्यापति के प्रेमपरक गीतों में रहस्यात्मक संकेतों के अनुसंधान की अपेक्षा लौकिक आसक्तियों के उदात्तीकरण की व्याख्या ही उचित जान पड़ती है।
विद्यापति की सौन्दर्यचेतना अप्रतिम और आह्लादकारी है। नायिका के अनिन्द्यसौन्दर्य का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है कि उसके केश अन्धकार की तरह है और मुख पूर्णिमा के चन्द्र की समान। नयनकमल भी अन्धकार और चन्द्र के लक्ष्य ही रह रहे हैं। इसे कौन विश्वास करेगा।
आज कवि ने इस लावण्यवती बाला को देखा है। मन्मथाहत हृदय उसके प्रति लुब्ध हो गया है। नायिका का सहज सुन्दर और गौर कलेवर है। उसके स्तन पुष्ट और शोभा सम्पन्न है। प्रतीत होता है कि स्वर्णलतिका पर दो पहाड़ उग आए हो। यथा– [1]

'सहज सुन्दर गोर कलेवर पीन पयोधर सिरि।
कनक लता अति विपरीत फलल जुगल गिरी।।'

कवि ने नायिका के रूप का वर्णन करते हुए कहा है कि उसकी कवरी (केशकलाप) के भय से चँवरी गायगिरी कन्दरा में तिरोधान हो गई। मुख के भय से चन्द्रमा आकाशगामी हो गया। नयनों के भय से हरिण, स्वरों के भय से कोकिल और गति के भय से गज बनवासी हो गये।
हे सुन्दरी! तुम मुझसे सम्भाषण क्यों नहीं करती हो? तुम्हारे भय से ये सबके सब दूर चले गये, फिर भी तुम किससे डर रही हो? तुम्हारे स्तनों के भय से कमल–कोरक जल में छिप गये और घट अग्नि में प्रवेश कर गया। दाड़िम (अनार) एवं श्रीफल (बेल) गगनवासी हो गये तथा शम्भु ने गरल ग्रास कर लिए। तुम्हारी भुजाओं के भय से मृणाल जल में छिप गये और कर के भय से किसलय डोलने लगे हैं। कवि के द्वारा इस चित्र का बहुविध वर्णन हुआ है। जैसे– [2]

'भुजभय पङ्क मृनाल नुकायल कर भय किसलय काँपे।
कवि सेखर भन कत–कत एइसन कहब मदन परतापे।।'

प्रेम का प्राकट्य संयोग और वियोग इन दोनों स्थितियों में होता है। कवि ने संयोगजन्य प्रेम का वर्णन करते हुए नायिका की प्रेमविषयक आसक्ति के विषय में लिखा है। सुन्दरी अपने प्रिय के घर जा रही है। चतुर्दिक् सखियों ने उसके हाथ को पकड़ लिया है। जाते ही नायिका की माला टूट

गई, भूषण और वस्त्र मलिन हो गये। रोने के कारण काजल बह गया। डर से सिन्दूर की रेखा मिट गई। विद्यापति के अनुसार दुःख सहने से ही सुख मिलता है।

प्रथम समागम की पूर्वपीठिका का वर्णन करते हुए कवि ने लिखा है कि नायिका जब प्रिय की शय्या के समीप आई तो वह अपने पैर की उँगलियों से नतग्रीव होकर पृथिवी पर कुछ लिखने लगी। प्रियतमा प्रिय के पास बैठकर कुटिल भौहों वाली आँखों से देखने लगी। नायिका नवीना है। अतः प्रार्थना में ही आधी रात बीत गई। बालम ने उसे हाथ पकड कर गोद में बैठा लिया। ऐसी स्थिति में नायिका अपने अंगों को मोड़ने लगी। वह भुजंगिनी की तरह प्रबोधित नहीं हो रही है।

विरहासक्ति के द्वारा प्रेम की जाग्रत् गति का प्राकट्य होता है। प्रेम की पूर्णता की सिद्धि के लिए विरह का आनयन आवश्यक हो जाता है। राधाकृष्ण विषयक प्रेम को महाभाव की संज्ञा दी गई है। महाभाव की मोदन और मादन नाम्नी स्थितियों में नायिका के जीवनोदधि में प्रेम की विचित्र तरंगे सृष्ट होती है।

मोहन मधुपुर चले गये और राधा की छाती विदीर्ण हो गई। मोहन ने सारी सौभाग्यवती गोपिकाओं को विस्मृत कर दिया। नायिका निद्रामग्न थी, उसी समय हाथ से यह स्पर्शमणी छूट गई। राधा तो ग्लानि से मरणासन्न हो रही है और कुब्जा दूसरे के धन से सम्पत्तिशालिनी हो रही है। जैसे– [3]

'कल कहबी कत सुमिइ रे, हम मरिए गरानि।
आनक धन सौ धनवति रे, कुब्जा भेल रानि।।'

नायिका के दुख की कोई सीमा नहीं है। भादव महीने में आकाश मेघाच्छन्न हो रहा है। नायिका का मन्दिर शून्य है। मेघ गर्जना कर रहे हैं। पृथिवी पर सब ओर वर्षा होती है। कन्त पाहुन हो गया है और काम दारुण हो रहा है। जिसके द्वारा सघन तीक्ष्णबाणों का अघात हो रहा है।

प्रिय के बिना विरहविदग्धा को चन्दन विषबाण के समान लग रहा है एवं भूषण भार स्वरूप प्रतीत हो रहा है। स्वप्न में भी गोकुल गिरिधारी का आगमन नहीं होता है। नायिका कदम्बवृक्ष के नीचे अकेली खड़ी होकर मुरारी का पथानुसन्धान करती है। हरि के विना देह दग्ध हो गई है और साड़ी मैली हो गई है। ऊधो! तुम मधुपुर निवासी मोहन से जाकर कहो कि चन्द्रवदनी नायिका जीवित नहीं रहेगी, उसके वध का पाप तुम्हें ही लगेगा। जैसे– [4]

'जाह–जाह तोहे उधो हो तोहे मधुपुर जाहे।
चन्द्रवदनि जहि जीउतिरे, वध लागत काहे।।'

भक्तिशब्द 'भज् सेवायाम्' [5] धातु से बना हुआ है। नारदीय भक्ति–सूत्र में भक्ति को अमृतरूपा और प्रेमरूपा कहा गया है। अखिल वृत्तियों का समर्पण ही भक्ति है। प्रभु का विस्मरण ही परम व्याकुलता का कारण हो जाता है। यह भक्ति अनिर्वचनीय कही गयी है, जो मुकास्वादवत् है।

भक्ति का मार्ग सहज है, जिस पर चलकर भगवान् की प्राप्ति होती है। भक्ति में राग एवं प्रीति का महत्त्व प्रकट होता है। भक्ति में ज्ञान पंगु हो जाता है और प्रीति का उद्रेक होता है।

कविकोकिल विद्यापति भक्त कवि थे, जिनकी वाणी की सरिता सहृदयों को आकण्ठ आप्लावित करती है। मिथिला निवासी पंचदेवोपासक होते हैं। विद्यापति भी पंचदेवोपासक थे। पंचदेवों में विष्णु एवं शिव भी आते हैं तथा श्रीकृष्ण विष्णु के अवतार माने जाते हैं। विद्यापति ने कृष्णलीला विषयक अनेक पदों की रचना की है। राधाकृष्णविषयक पदों की रचना के कारण ही ये विश्वविख्यात हुए। शिव एवं शिवा ये दोनों अभिन्न हैं। जैसे– [6]

'वागर्थाविव सम्पृक्तौ वागर्थप्रतिपत्तये।
जगतः पितरौ वन्दे पार्वती परमेश्वरौ।।'

विद्यापति ने शिव एवं शिवाविषयक अनेक पदों की रचना की है। शिव को विचेष्ठित करने में भगवती का सहयोग ही सर्वोपरि है। यही भगवती भैरवी के नाम से जानी जाती है। भैरवी के तीन वर्ण– भ, र एवं व क्रमशः भरण पालन, र रक्षा एवं व विनाश का प्रतीक माना जाता है। ये भैरवी पशुपति शिव की पत्नी है। अतः इन्होंने लिखा है– [7]

'जय जय भैरवी असुर भयाउनि पशुपति–भामिनी माया।
सहज सुमति वर दिय हे गोसाउनि अनुगति गति तुअ पाया।।'

विद्यापति की शिवविषयक नचारियों में अप्रतिम भक्ति–भावना प्रकट हुई है। इन्होंने शिव की लीला–वैचित्री का साकार चित्र प्रस्तुत किया है। ये दिगम्बर शिव के प्रति भावनाओं के पुष्पों का समर्पण करते हुए आनन्दमग्न होकर गायन करते हैं– [8]

'शिव हो उतरव पार कवन विधि,
लड़हबम कुसुम तोड़ब बेलपात
पूजब सदाशिव गौरीक साथ।।'

शिव के द्वारा ही सम्पूर्ण पाशों का उन्मोचन सम्भव है। भगवान् श्रीकृष्ण जिस मुरलिका के शब्दछिद्रों पर उंगलियों को चलाकर मधुर रागिनी की सृष्टि करते हैं तथा व्रज– वनिताएँ आकुलप्राणा होकर रासस्थली की ओर दौड़ती है। वह मुरलिका रुद्रावतार ही है। जैसे–[9] 'रुद्रो वै वेणुः।'

विद्वानों ने विद्यापति के राधाकृष्णविषयक पद्यों में आत्मा और परमात्मा की लीला का अनुसन्धान किया है। राधादि व्रजगोपिकाएँ प्रियतमकृष्ण से मिलन हेतु जिस प्रकार आकुलता को प्रकट करती है वह आत्मा एवं परमात्माविषयक मिलन की ही व्याकुलता है।

राधाकृष्णविषयक प्रेम की अष्ट अन्तर्दशाएँ स्नेह, मान, प्रणय राग, अनुराग भाव और महाभाव मानी गयी है। इस महाभाव का वर्गीकरण इस प्रकार किया गया है– महाभाव के दो वर्गीकरण होते हैं– रूढ और अधिरूढ रूढि। इनमें अधिरूढ रूढि के भी दो वर्गीकरण होते हैं– मोदन और मादन। मोदन की स्थिति राधायूथ में सम्भव है और मादन की एकमात्र अधिष्ठात्री राधा है। मादनाख्य राधा के जीवनसमुद्र में प्रेम की विचित्र लहरें प्रकट होती हैं, जिसके कारण विरहावस्था में राधा–कृष्ण की हो जाती है। जैसे– [10]

'अनुखन माधव माधव सुमिरति, सुदरि भेलि मधाई।
आ निज भाव सुभावहि विसरलि, आपन गुन लुबुधाई।।'

राधा–कृष्णविषयक भक्ति रागानुरागा के नाम से जानी जाती है। इसमें राग या प्रीति की ही प्रधानता होती है। प्रेम की पराकष्ठा ही महाभाव है। कवि ने भक्तिमूला महाभाव का विवेचन अपने अनेक पद्यों के माध्यम से किया है।

विद्यापति ने राधा–कृष्णविषयक पद्यों की रचना कर देवोन्मुख रति को पुष्ट करने की चेष्टा की है। कृष्ण के प्रति समर्पित काम अलौकिक हो जाता है।

फलतः उसके लौकिक दंशो का निगरण हो जाता है। यही समर्पित काम कामना भक्ति को जन्म देता है। कवि ने संयोग और वियोग के उभय कूलों के बीच भक्तिसरिता को प्रवाहित किया है जिससे उनके वियोगविषयक पद्यों में भक्ति की तन्मयता शक्तिविशेषरूपेण प्रकट हुई है। उन्होंने ने लिखा है– [11]

'लोचन नीर तटिनी निरमाने।
करइ कमलमुखि तार्तीह सनाने।।'

निष्कर्षः

विद्यापति पंचदेवोपासक भक्त कवि थे। उन्होंने बंगाल के सहजिया सम्प्रदाय की मान्यताओं को राधा–कृष्णविषयिणी भक्ति की दिव्यता प्रदान की। उनकी भक्ति–भावना से प्रभावित होकर ही शिव ने उगना रूप में उनके यहाँ चाकरी की थी और अन्तकाल में गंगा भी उनकी और प्रवाहित हो गयी है। विद्यापति भक्त कवि थे। उन्होंने शृंगार की भक्तिमूला व्याख्या की है। निष्कर्षतः कहा जा सकता है कि विद्यापति ने अपने महाभाव के वर्णन के द्वारा परम चमत्कार की सृष्टि की है जो अनुसन्धेय तथा व्याख्येय है।

सन्दर्भ–सूचीः

1. पदावली–140.5
2. कीर्तिलता, भूमिका, पृ.–5
3. पदावली, भूमिका, पृ.–9
4. पदावली, पृ.–45
5. सिद्धान्तकौमुदी, धातु सं.–998
6. रघुवंश–1.1
7. विद्यापति कविताकोश–1
8. विद्यापति मैथिलीलोकगीत–5
9. शैवसर्वस्वसार, पृ.–23
10. कीर्तिलता, भूमिका, पृ.–13
11. विद्यापति पदावली, पृ.–19